पाठ- 4 : मीराँबाई

मूल भाव- मीराँ ने अपने पदों में श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम और भक्ति का सुंदर निरूपण किया है। प्रियतम श्रीकृष्ण की बाँकी छवि उनके मन-मस्तिष्क में इतने गहरे पैठ गई है कि वे अपने अस्तित्व के बोध को भी खो बैठी हैं। वे प्रेम की अनुभूति को सँजोए रखना चाहती हैं और प्रेम के प्रति समर्पित हैं। उनका उठना, बैठना, सोना, जागना, पहनना, ओढ़ना, खाना, पीना तथा मान, अपमान, राग, द्वेष सभी कुछ कृष्ण के लिए है, फिर चाहे लोक-अपवाद मिले या परिवार और राजसत्ता की ओर से यातनाएँ - वे अपने प्रेम की शक्ति से सबको परास्त कर देती हैं। प्रेम के मिलन की पुलक, उत्साह और आनंद तथा विरह की पीड़ा, व्याकुलता और वेदना, सभी भावों की उन्होंने अत्यंत सहज, सुंदर और सटीक अभिव्यक्ति की है। व्यक्तिगत जीवन-अनुभवों से प्राप्त अनुभूति की तीव्रता उनके काव्य का निजी विशेषता है।

मुख्य बिंदु

- मीराँ कहती हैं कि मैं तो गिरधर के घर जाती हूँ, वही मेरा सच्चा प्रियतम है और उसके रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हूँ अर्थात कृष्ण के परम सौंदर्य ने मेरे मन में दर्शन का लोभ उत्पन्न कर दिया है। अतः मैं उसके प्रेम के वशीभूत होकर। रात होते ही उसके घर जाने के लिए तत्पर हो जाती हूँ तथा प्रातःकाल होते ही वहाँ से उठ आती हूँ।
- मैं रात-दिन उसके साथ खेलती हूँ तथा हर प्रकार से उसे रिझाने तथा प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हूँ। अब वह मुझे जो भी पहनाए मैं वही पहनूँगी तथा जो कुछ खाने को दे, वही खा लूँगी।
- मेरी और उनकी (श्रीकृष्ण की) प्रीति पुरानी है और मैं उनके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। वह जहाँ चाहे मैं वहीं बैठ जाऊँगी और यदि वह मुझे बेचना भी चाहें तो मैं सहर्ष बिक जाऊँगी। मीराँ कहती हैं कि गिरधर नागर यानी श्रीकृष्ण मेरे स्वामी हैं तथा मैं बार-बार उन पर न्योछावर होती हूँ।
- मीराँ कहती हैं कि 'हे सखी! मैंने तो श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है अर्थात् मैंने कृष्ण के साथ अपने संबंध का मूल्य भी चुकता किया है। तुम कहती हो कि मैं उनसे यह संबंध छिपकर रखती हूँ और मैं कहती हूँ कि मैंने खुले में ढोल बजाकर श्रीकृष्ण को मोल लिया है। मुझे उनसे प्रेम है और मैं सार्वजनिक तौर पर इस प्रेम की घोषणा करती हूँ। मीराँ कहती हैं कि 'हे सखी, तुम कहती हो कि यह सौदा महँगा है पर मेरा मानना है कि यह बहुत सस्ता है; क्योंकि मैंने यह सौदा तराजू पर तोल कर किया है अर्थात मैंने पूर्ण रूप से सोच–विचार कर, जाँच-परख कर ही ऐसा किया है और इसका जो मूल्य मैंने चुकाया है, वह तुम्हारी दृष्टि में अधिक हो सकता है, पर मेरी दृष्टि में श्रीकृष्ण को पाने के लाभ की तुलना में बहुत कम है। मैंने तो उन पर अपना तन-मन और जीवन सभी कुछ न्योछावर कर दिया है।
- मीराँ कहती हैं कि हे सखी, प्रियतम के वियोग में हमारी नींद जाती रही है, प्रियतम की राह देखते हुए सारी रात व्यतीत हो गई है। हालाँकि सारी सखियों ने मिलकर मुझे सीख दी थी, पर मेरे मन ने उनकी एक न मानी और मैंने कृष्ण से यह स्नेह संबंध जोड़ ही लिया। अब यह हालत है कि उन्हें देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता और बैचेनी भी जैसे मुझे अच्छी लगने लगी है। मेरा सारा शरीर अत्यंत दुबला और व्याकुल हो गया है तथा मेरे मुख पर सिर्फ प्रियतम का ही नाम है। वे कहती हैं, हे सखी! मेरे विरह ने मुझे जो आंतरिक पीड़ा दी है, उस पीड़ा को कोई नहीं जान पाता। जैसे चातक बादल की ओर एक टक दृष्टि लगाए रहता है और मछली पानी के बिना नहीं रह पाती, तड़पती रहती है, ठीक उसी प्रकार मैं, अपने प्रियतम के लिए तड़पती हूँ। प्रिय के वियोग में अत्यंत व्याकुल हो गई हूँ और इस व्याकुलता में अपनी सुध-बुध भी खो बैठी हूँ।

सराहना पक्ष

काव्य किसी बँधी-बँधाई काव्य परंपरा में नहीं आता तथा मीराँ के पदों का वैशिष्ट्य उनकी तीव्र आत्मानुभूति में निहित है।

मीराँ के काव्य का विषय है – श्रीकृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम और भक्ति।

मीराँ ने प्रेम के मिलन (संयोग) तथा विरह (वियोग) दोनों पक्षों की सुंदर अभिव्यक्ति की है।

श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम में मीराँ किसी भी प्रकार की बाधा या यातना से विकल नहीं होतीं। लोक का भय अथवा परिवार की प्रताड़ना दोनों का ही वे दृढ़ता से सामना करती हैं।

गीतिकाव्य की दृष्टि से मीराँ के काव्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मीराँ की रचनाएँ विभिन्न राग-रागनियों पर आधारित हैं तथा उन्होंने अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है।

मीराँ की भाषा राजस्थानी और गुजराती मिश्रित ब्रज है तथा सरल अभिव्यक्ति शैली उनकी प्रमुख विशेषता है।

अधिकतम अंक कैसे पाएं : इन पदों के अर्थ को समझते हुए भाव-सौंदर्य तथा शिल्प-सौंदर्य को अपने शब्दों में लिखा कर अभ्यास करें।

अपना मूल्यांकन करें

'मीराँ के पदों में तीव्र आत्मानुभूति का दर्शन होता है।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

'मीराँ ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम और भक्ति का सुंदर निरूपण किया है।' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

'प्रेम के मिलन (संयोग) तथा विरह (वियोग) दोनों पक्षों की अभिव्यक्ति मीरां के पदों में हुई है।' सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को सिद्ध करने के लिए मीरा लोक का भय अथवा परिवार की प्रताड़ना दोनों का ही दृढ़ता के साथ सामना करती हैं। इससे क्या स्पष्ट होता है?

गीतिकाव्य की दृष्टि से मीराँ के काव्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्णन कीजिए।